http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 10, 8-10

Article ID:476

ब्रुसेलोसिस: पशुओं और किसानों को प्रभावित करने वाला एक संक्रामक रोग

डॉ० अंकेश कुमार एवं डॉ० अनिल कुमार

बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना
बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-800014

*अनुरूपी लेखक
डॉ० अंकेश कुमार*

ब्रुसेलोसिस एक संक्रामक रोग है जो पशुओं से मानव में फैलता है। यह रोग पशुओं में बांझपन, गर्भपात और दूध उत्पादन में कमी का कारण बनता है। मानव में यह बुखार, थकान और जोड़ों में दर्द का कारण बनता है। ब्रुसेलोसिस के कारण पशुओं की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इस रोग के नियंत्रण के लिए टीकाकरण और जानवरों के स्वास्थ्य की निगरानी आवश्यक है। ब्रुसेलोसिस के लक्षणों को पहचानने और इसके प्रसार को रोकने के लिए जागरूकता आवश्यक है। किसानों को अपने जानवरों के स्वास्थ्य की देखभाल करनी चाहिए। ब्रुसेलोसिस के निदान और उपचार के लिए चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। इस रोग के प्रसार को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक है। ब्रुसेलोसिस के प्रसार को रोकने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। ब्रुसेलोसिस के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। ब्रुसेलोसिस के नियंत्रण के लिए पशु स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत किया जाना चाहिए। ब्रुसेलोसिस के प्रसार को रोकने के लिए जानवरों के आवागमन पर नियंत्रण रखा जाना चाहिए। ब्रुसेलोसिस के निदान के लिए प्रयोगशाला परीक्षणों का उपयोग किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्दः संक्रामक रोग, पशु स्वास्थ्य, किसान सुरक्षा, मानव स्वास्थ्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य

ब्रुसेलोसिस पशुओं एवं मनुष्यों में होने बाली एक अत्यधिक संक्रामक बिमारी है। यह पशुओं से मनुष्यों में फैलता है। ब्रुसेलोसिस विश्व स्तर पर पाया जाता है और अधिकांश देशों में यह एक रिपोर्ट योग्य बीमारी है। इसे जूनोटिक बिमारी भी कहतें हैं जिसका पशुपालकों पर महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव होता है। इस बिमारी का सार्वजनिक स्वास्थ्य पर भी काफी प्रभाव पड़ता है। इसे संक्रामक गर्भपात या बैंग रोग के नाम से भी जाना जाता है।

ये बिमारी ब्रुसेलोसिस नामक परिवार के जीवाणु द्वारा होता है जो किसी खास पशुओं को संक्रमित करती है। यद्धपी ये अन्य पशुओं को भी संक्रमित करती है। ये दुधारू पशुओं, सूअरों, भेड़ों, बकरियों, ऊटों, घोड़ों, कुत्तों, लोमरी, चमगादर एवं जंगली जानबरों को प्रभावित करतें है। ये अन्य जुगाली करने वाले पशुओं को भी प्रभावित करतें है।

इस बिमारी से पशुओं में गर्भपात एबं प्रजनन संबंधी समस्याएँ उत्पंन होती है, जबकि जानवर आम तौर पर ठीक हो जाते हैं, और प्रारंभिक गर्भपात के बाद जीवित संतान पैदा करने में सक्षम होते हैं साथ ही साथ वे शरीर के स्रावों द्वारा जीवाणु निकलना जारी रख सकते है।

मनुष्य को यह बीमारी संक्रमित जानवरों और उनके उत्पादों से होती है, इस बिमारी के जोखिम समुहों में प्रजनक, पशुचिकित्सक, प्रयोगशाला परिचर एबं डेयरी कर्मचारी और बूचड़खाने के मजदूर होते हैं। आमजन को ये बिमारी मुख्यतः कच्चे दूध तथा अपाश्चुरीकृत डेयरी उत्पाद के सेवन से होता है एवं कुछ हद तक अध्-पकेे मांस के सेवन से हो सकता है।

इस बिमारी से प्रभावित मनुष्यों में बुखार, थकावट , जोड़ों में दर्द , हृदय एवं सिर में जटिलताएँ उत्पन्न हो जातें है। इस बिमारी का निदान क्लिनिकल इवैल्यूएशन, प्रयोगशाला जाँच, रक्त सीरम और आणविक परीक्षण द्वारा किया जाता है।

उपचार रणनीति के तौर पर बहुत सारे एंटीबायोटिक मिला कर पशु या मनुष्यों को जरुरत के

हिसाब से दिया जाता है। यद्यपी एंटीबायोटिक प्रतिरोधकता होने के चलतें ये एक मुख्य चुनौती भी है। ब्रुसेलोसिस की रोकथाम के लिए पशुओं में टिकाकारण एक प्रमुख उपाय है।

गायों में ब्रुसेलोसिस, ब्रुसेल्ला अबोर्टुस, भेड़ों एबं बकरियों में ब्रुसेल्ला मेलितेंसिस और सुकरों में ब्रुसेल्ला सुईस नामक जीवाणु बिमारी उत्पंन करतें हैं। ये बीमारियाँ विश्व पशु स्वाथ्य संगठन द्वारा चिन्हित है।

संचरण और प्रसारः

ब्रुसेलोसिस बिमारी का संचार मुख्यतौर पर जब संक्रमित पशुओं में गर्भपात होती है और जब ये अपने बच्चे को जन्म दे रही होती हैं तब होती है। ये जीवाणु अधिसंख्य मात्रा में संक्रमित पशु के जन्म के पश्चात निकलने वाली स्त्राव में मौजूद होती है। ये ब्रुसेल्ला जीवाणु खास कर ठंडे और नमी वातावरण में कई महीनो तक जिन्दा रह सकते हैं। स्वस्थ पशुओं में इसका संक्रमण दूषित चारे को खाने के कारण होता है। यह बैक्टीरिया थन में भी निवास करते हैं और दूध को दूषित करते हैं। यह रोग जानवरों और मनुष्यों को त्वचा में कटने या श्लेष्मा झिल्ली के माध्यम से भी संक्रमित कर सकता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिम:

मनुष्यों के लिए ब्रुसेलोसिस एक जूनौटिक एबं अत्यधिक संक्रामक बीमारी है जो उन्दुलंत फीवर और माल्टा फीवर के नाम से भी जाना जाता है। मनुष्यों में इसकी पहचान रुक-रुक कर ज्वर आना, सिर दर्द, कमजोरी, पसीना आना , ठण्ड लगना, वजन में कमी , पूरे शरीर में दर्द आदि लक्षण पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त मनुष्यों के जिगर और तिल्लियों में संक्रमण हो सकता है।

पशुचिकित्सक, पशुपालक, किसान और बुचारखाने के कर्मचारी इस संक्रमण से आसानी से संक्रमित या आक्रांत हो जाते हैं। ब्रुसेलोसिस एक आसानी से संक्रमित होने बाला प्रयोगशाला संक्रमण है, इसलिए, बैक्टीरियल कल्चर और अत्यधिक संक्रमित नमूनों, जैसे कि गर्भपात के उत्पादों, को संभालते समय सख्त सुरक्षा सावधानियां बरती जानी चाहिए। यह बीमारी संक्रमित जानवरों से आने वाले बिना पाश्चुरीकृत दूध के सेवन से भी लोगों में फैल सकती है।

रोग के लक्षणः

मादा पशुओं में रोग के लक्षण

- इस रोग से प्रभावित मादा पशुओं में गर्भावस्था के प्रायःअंतिम तीन माह में गर्भपात। समय से पहले बच्चा होना। गर्भकाल पूरा होने पर मरे हुए बच्चा का पैदा होना।
- कुछ संक्रमित पशुओं में समय पर बछरा पैदा होने के बाबजूद भी लगभग एक सप्ताह के अन्दर बछरे की मृत्यु का होना।
- गर्भाशय में सुजन एवं प्रसब उपरांत जेर रुकने की सम्भावना।
- पहले गर्भपात के बाद दूसरी बार गर्भधारण प्रायः सामान्य होता है, परन्तु पशुओं के दूध एबं पेशाब में जीवाणु का निकलना जारी रहता है। जिससे बिमारी का संक्रमण बना रहता है।
- पशु में बाँझपन एवं बाँझ पशु इस रोग के जीवाणु के वाहक होते है।

नर पशुओं में लक्षणः

नर पशुओं के अन्डकोश में सूजन, पशु के प्रजनन क्षमता में कमी तथा ऐसे पशु इस रोग के जीवाणु के वाहक होते हैं। कभी कभी ये बैक्टीरिया आस्थि जोर में स्थानबद्ध हो करआर्थ्राइटिस का कारण भी होता है।

घोड़ों में लक्षणः

घोड़ों में, यह फिस्टुलस विदर्स या पोल ईविल नामक स्थिति का कारण बनता है जिसके कारण घोड़े के गर्दन और पीठ पर सूजन हो जाते है। संक्रमित गर्भवती घोड़ियों में या तो गर्भपात हो जाती या फिर बहुत ही कमजोर बच्चे को जन्म देती है।

मनुष्यों में लक्षणः

मनुष्यों में ब्रुसेलोसिस एक बहुआयामी बीमारी है जो हल्के से लेकर गंभीर लक्षणों के साथ विभिन्न अंगों को प्रभावित करती है। तीब्र इन्फ्लुएंजा के समान ज्वर घटता-बढ़ता रहता है, इसे लहरिया ज्वर भी कहते है। अत्यधिक पसीना आना, सिर दर्द, जोड़ों एवं मांशपेशियों में दर्द, भूख में कमी इत्यादि लक्षण प्रमुख हैं। ऊंट,भैंस, भेड़, बकरी, सुकर एवं अन्य जुगाली करने वाले पशुओं में भी लक्षण उपर्युक्त वर्णित लक्षणों के समान ही होते हैं।

रोग से बचाव के उपायः

- इस रोग से बचाव टीकाकरण से ही संभव है। हर्ड (झुण्ड) के ४-८ माह के उम्र वाले बाछियों एबं पाड़ियों को ब्रुसेल्ला एबोर्ट्स (स्ट्रेन-19) का टिका दिलवाना चाहिए। ये टिका पशु के जीवन काल में सिर्फ एक ही बार दिया जाता है।

- रोगग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। नए पशुओं को झुण्ड में शामिल करने से पूर्व ब्रुसेलोसिस रोग के विरुद्ध जाँच करा लेनी चाहिए।

किसानो के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

- प्रभावित पशुओं के संपर्क में आने से पहले और बाद में अपने हाँथ एंटीसेप्टिक से धोना आवश्यक है।
- प्रभावित जानवरों के शरीर के तरल पदार्थों, जैसे की रक्त, मूत्र, लोचियल स्त्राव और वीर्य के संपर्क से बचना चाहिए।
- स्वस्थ्य पशुओं के लिए स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना आवश्यक है।
- पशुओं में रोग के लक्षण प्रकट होते ही तुरंत पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- मृतपशु या गर्भपात के बाद निकले सभी द्रव्यों को जला देना चाहिए।